Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय ज्ञान परम्परा : एक गौरवशाली विरासत – एक विश्लेषण

डॉ. ज्योति सिंह *

* सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) शासकीय स्नातक महाविद्यालय, नैनपुर, जिला मंडला (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध ज्ञान प्रणालियों में से एक है। यह परम्परा वेद, उपनिषद, महाकाव्य, दर्शन, आयुर्वेद, योग, गणित और शिक्षा प्रणाली जैसे विविध आयामों से विकसित हुई है। भारतीय चिंतन में ज्ञान का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि आत्मबोध, नैतिकता और सामाजिक उत्तारदायित्व की स्थापना है। 'सत्य', 'अहिंसा', 'धर्म' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे मूल्यों ने भारतीय समाज को एकता और संतुलन प्रदान किया है।

इस शोध पत्र में भारतीय ज्ञान परम्परा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रमुख दार्शनिक धाराओं–सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त का विश्लेषण किया गया है। साथ ही गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, वैज्ञानिक एवं गणितीय योगदान तथा आधुनिक समय में इसकी प्रासंगिकता पर भी चर्चा की गई है। वर्तमान वैश्वीकरण के युग में मानसिक तनाव, नैतिक संकट और सांस्कृतिक विघटन जैसी चुनौतियों के समाधान हेतु भारतीय ज्ञान परम्परा उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

अत: यह स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परम्परा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के निर्माण की आधारशिला है। इसके संरक्षण, संवर्धन और समकालीन संदर्भ में पुनर्पाठ की आवश्यकता है, ताकि यह विश्व मानवता के कल्याण में पुन: प्रभावी भूमिका निभा सके।

शब्द कुंजी – भारतीय ज्ञान परम्परा, वेद, उपनिषद, दर्शन, गुरुकुल शिक्षा, आयुर्वेद, योग, नैतिक मूल्य, सांस्कृतिक विरासत, वसुधैव कुटुम्बकम्, भारतीय दर्शन, संरक्षण।

प्रस्तावना – भारत को प्राचीन काल से ही ज्ञान और अध्यात्म की भूमि माना जाता रहा है। यहाँ की सभ्यता केवल भौतिक उन्नति तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने मानव जीवन के गहरे प्रश्नों–मैं कौन हूँ? जीवन का उद्देश्य क्या है? सत्य क्या है?–का उत्तर खोजने का प्रयास किया। भारतीय ज्ञान परम्परा इसी निरंतर खोज और अनुभव का परिणाम है। यह परम्परा हजारों वर्षों से वेद, उपनिषद, दर्शन, महाकाव्य, शास्त्र और लोकपरम्पराओं के माध्यम से विकसित होती रही है।

भारतीय ज्ञान परम्परा की विशेषता यह है कि यह केवल सैद्धांतिक चिंतन नहीं, बल्कि व्यवहारिक जीवन से जुड़ी हुई है। यहाँ ज्ञान का उद्देश्य केवल बुद्धि का विकास नहीं, बल्कि चरित्र, नैतिकता और आत्मानुशासन का निर्माण है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' और 'सा विद्या या विमुक्तये' जैसे वाक्य इस परम्परा की मूल भावना को व्यक्त करते हैं। ज्ञान को मुक्ति, आत्मबोध और लोकमंगल का साधन माना गया है।

प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को समग्र रूप से विकसित करना था। गुरुकुल परम्परा में विद्यार्थी केवल पाठ्य विषयों का अध्ययन नहीं करते थे, बल्कि जीवन मूल्यों, अनुशासन, सेवा और प्रकृति के साथ सामंजस्य भी सीखते थे। यही कारण है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली ने एक संतुलित और नैतिक समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आज के वैश्वीकरण और तकनीकी युग में जहाँ भौतिक प्रगति तीव्र गति से हो रही है, वहीं मानसिक तनाव, पर्यावरण संकट और सामाजिक विघटन जैसी समस्याएँ भी बढ़ रही हैं। ऐसे समय में भारतीय ज्ञान परम्परा संतुलन, सह–अस्तित्व, अहिंसा और वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना के माध्यम से मानवता को नई दिशा प्रदान कर सकती है।

शोध पत्र का उद्देश्य– इस शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसके प्रमुख स्रोतों, दार्शनिक आधारों, वैज्ञानिक योगदानों तथा आधुनिक संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है। साथ ही यह स्पष्ट करना है कि यह परम्परा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के निर्माण की आधारशिला है।

भारतीय ज्ञान परम्परा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – भारतीय ज्ञान परम्परा का विकास हजारों वर्षों में क्रमिक रूप से हुआ है। यह किसी एक व्यक्ति, ग्रंथ या काल की देन नहीं, बल्कि सतत चिंतन, अनुभव और साधना का परिणाम है। इसकी जड़ें सिंधु–सरस्वती सभ्यता से लेकर वैदिक युग, उपनिषद काल, महाकाव्य काल, शास्त्रीय युग, मध्यकाल और आधुनिक काल तक फैली हुई हैं। नीचे इसके विकास को कालक्रमानुसार विस्तार से समझाया गया है।

सिंधु–सरस्वती सभ्यता (लगभग 2500–1500 ई.पू.)

भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रारंभिक संकेत सिंधु–सरस्वती सभ्यता में मिलते हैं। यह सभ्यता वैज्ञानिक दृष्टि, नगर नियोजन और सामाजिक संगठन के लिए प्रसिद्ध थी।

सुनियोजित नगर व्यवस्था, जल निकासी प्रणाली और वास्तुकला उच्च वैज्ञानिक सोच को दर्शाते हैं।

धातु विज्ञान, व्यापार और कृषि का विकास हुआ।

धार्मिक प्रतीकों में प्रकृति पूजा और योगासन की मुद्राओं के संकेत मिलते हैं।

यद्यपि इस सभ्यता की लिपि अभी पूर्णत: पढ़ी नहीं जा सकी है, फिर भी इसके अवशेष यह प्रमाणित करते हैं कि उस समय ज्ञान और विज्ञान का व्यवस्थित स्वरूप मौजूद था।

वैदिक काल (1500–600 ई.पू.)

भारतीय ज्ञान परम्परा का सशक्त आधार वैदिक काल में विकसित हुआ।
चार वेद–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद–इस युग के प्रमुख ज्ञान स्रोत हैं।
ऋग्वेद में प्रकृति, देवताओं और ब्रह्मांड संबंधी स्तुतियाँ मिलती हैं।
यजुर्वेद में यज्ञ और कर्मकांड का वर्णन है।
सामवेद में संगीत और स्वर विज्ञान का आधार मिलता है।
अथर्ववेद में चिकित्सा, मंत्र और लोकजीवन से जुड़े विषय हैं।
इस काल में समाज, धर्म, राजनीति और अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत विकसित हुए। शिक्षा गुरु–शिष्य परम्परा के माध्यम से मौखिक रूप में दी जाती थी।

उपनिषद काल (800–400 ई.पू.)

यह काल दार्शनिक चिंतन का स्वर्ण युग माना जाता है। उपनिषदों में आत्मा, ब्रह्म, कर्म और मोक्ष की अवधारणा का गहन विश्लेषण मिलता है।
'तत्तवमसि' (तू वही है) और 'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ब्रह्म हूँ) जैसे महावाक्य आत्मज्ञान का संदेश देते हैं।
ज्ञान को आंतरिक अनुभूति और आत्मबोध से जोड़ा गया।
कर्म और पुनर्जन्म की अवधारणा स्पष्ट हुई।
इस काल में भारतीय दर्शन की नींव पड़ी, जिसने आगे चलकर विभिन्न दार्शनिक संप्रदायों को जन्म दिया।

महाकाव्य काल (600–200 ई.पू.)

इस काल में दो महान ग्रंथों की रचना हुई–
रामायण
महाभारत
इन ग्रंथों में धर्म, नीति, आदर्श जीवन, कर्तव्य और सामाजिक संबंधों का विस्तृत वर्णन मिलता है।
महाभारत का एक महत्वपूर्ण अंश भगवद्गीता है, जिसमें कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का समन्वय प्रस्तुत किया गया है।
यह काल नैतिकता और सामाजिक संगठन के विकास का काल था।

शास्त्रीय काल (200 ई.पू.–1200 ई.)

इस काल में भारतीय ज्ञान परम्परा ने अपने शिखर को प्राप्त किया।
(क) दर्शन
षड्दर्शन–सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त–का व्यवस्थित विकास हुआ।
(ख) चिकित्सा
चरक संहिता और सुश्रुत संहिता की रचना हुई, जिनमें चिकित्सा और शल्यक्रिया का विस्तृत वर्णन है।
(ग) गणित और खगोल
आर्यभट्ट ने खगोल और गणित में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
भास्कराचार्य ने बीजगणित और गणना पद्धति को विकसित किया।
(घ) शिक्षा केंद्र
नालंदा विश्वविद्यालय और तक्षशिला विश्वविद्यालय जैसे विश्वविद्यालय विश्व प्रसिद्ध थे।
यह काल भारतीय ज्ञान का स्वर्ण युग माना जाता है।

मध्यकाल (1200–1700 ई.)

इस काल में भारतीय ज्ञान परम्परा ने भक्ति आंदोलन और सूफी परम्परा के माध्यम से नई दिशा प्राप्त की।
संत कबीर, गुरु नानक, तुलसीदास आदि ने लोकभाषा में ज्ञान का प्रसार किया।
आध्यात्मिकता को सरल और जनसुलभ बनाया गया।
धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक सुधार पर बल दिया गया।
इस समय इस्लामी और भारतीय ज्ञान परम्पराओं का सांस्कृतिक समन्वय भी हुआ।

आधुनिक काल (1700 ई. के बाद)

औपनिवेशिक शासन के दौरान भारतीय शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन हुए। पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव बढ़ा।
फिर भी भारतीय चिंतकों–स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन आदि–ने भारतीय ज्ञान की पुर्नस्थापना का प्रयास किया।
आधुनिक समय में योग, आयुर्वेद और गीता का पुनर्मूल्यांकन हुआ और विश्व स्तर पर स्वीकार्यता मिली।

'भारतीय ज्ञान परम्परा का विकास क्रमिक, समन्वयात्मक और बहुआयामी रहा है। इसमें आध्यात्मिकता और विज्ञान का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है। यह परम्परा समय के साथ परिवर्तित होती रही, परंतु उसके मूल मूल्य–सत्य, अहिंसा, धर्म और सह–अस्तित्व–अपरिवर्तित रहे।'

इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि एक सतत प्रवाहित धारा है, जो आज भी समाज को दिशा प्रदान कर रही है।

भारतीय दर्शन की प्रमुख धाराएँ

1. **सांख्य दर्शन –** सांख्य दर्शन के अनुसार संसार प्रकृति और पुरुष दो तत्वों से मिलकर बना है।
यह ज्ञान के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताता है।
2. **योग दर्शन –** योग दर्शन मन और इन्द्रियों के नियंत्रण पर बल देता है।
यह अष्टांग योग के माध्यम से आत्मसाक्षात्कार का मार्ग दिखाता है।
3. **न्याय दर्शन –** न्याय दर्शन तर्क और प्रमाण के आधार पर सत्य की खोज करता है।
यह ज्ञान प्राप्ति के साधनों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है।
4. **वैशेषिक दर्शन –** वैशेषिक दर्शन पदार्थ और उसके गुणों का विश्लेषण करता है।
यह संसार को परमाणुओं से निर्मित मानता है।
5. **मीमांसा दर्शन –** मीमांसा दर्शन वेदों के कर्मकांड और धर्म के पालन पर बल देता है।
यह कर्तव्य और यज्ञ की महत्ता को स्पष्ट करता है।
6. **वेदान्त दर्शन –** वेदान्त दर्शन ब्रह्म और आत्मा की एकता को स्वीकार करता है।
यह मोक्ष को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मानता है।

शिक्षा प्रणाली: गुरुकुल परम्परा

प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली गुरु-शिष्य परम्परा पर आधारित थी, जिसे गुरुकुल प्रणाली कहा जाता है। 'गुरुकुल' का अर्थ हैकृगुरु का आश्रम या निवास स्थान, जहाँ विद्यार्थी रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। इस प्रणाली में शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि जीवन के समग्र विकास पर बल दिया जाता था।

विद्यार्थी गुरु के साथ रहकर अनुशासन, सेवा, आत्मनिर्भरता और नैतिक मूल्यों को व्यवहार में सीखते थे। शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण, आत्मसंयम और समाज के प्रति उत्तरदायित्व विकसित करना था। वेद, उपनिषद, व्याकरण, गणित, आयुर्वेद, धनुर्वेद, संगीत और राजनीति जैसे विषय पढ़ाए जाते थे।

गुरु और शिष्य के बीच गहरा आत्मीय संबंध होता था। शिक्षा नि:शुल्क होती थी और अंत में शिष्य अपनी सामर्थ्य के अनुसार 'गुरुदक्षिणा' देता था।

नालंदा विश्वविद्यालय और तक्षशिला विश्वविद्यालय जैसे प्राचीन शिक्षा केंद्र इसी परम्परा के उन्नत रूप थे, जहाँ देश-विदेश से विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे। इस प्रकार गुरुकुल परम्परा भारतीय शिक्षा प्रणाली का आधार स्तम्भ रही है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित और विज्ञान – भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित और विज्ञान केवल तकनीकी विषय नहीं थे, बल्कि जीवन-दर्शन, प्रकृति-चिंतन और आध्यात्मिक खोज से जुड़े हुए थे। यहाँ ज्ञान का उद्देश्य सत्य की खोज और लोककल्याण था। वेदों, उपनिषदों, शास्त्रों और विभिन्न दर्शनों में वैज्ञानिक सोच के स्पष्ट संकेत मिलते हैं।

गणित में योगदान

1. **शून्य और दशमलव प्रणाली –** आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त ने शून्य (0) और स्थानमान पद्धति को विकसित किया।

यह प्रणाली आज के कंप्यूटर विज्ञान और आधुनिक गणित की आधारशिला है।

2. **बीजगणित और त्रिकोणमिति –** भास्कराचार्य ने 'लीलावती' और 'बीजगणित' ग्रंथों में समीकरणों और गणनाओं को सरल रूप में प्रस्तुत किया।

'ज्या' (Sine) और 'कोज्या' (Cosine) की अवधारणा भारत में विकसित हुई।

3. **ज्यामिति और शुल्बसूत्र –** बौधायन के शुल्बसूत्र में पाइथागोरस प्रमेय का उल्लेख मिलता है, जो बाद में यूनान में प्रसिद्ध हुआ।

4. **अनंत श्रेणियाँ –** माधव (केरल गणित परंपरा) ने पाई (ष्ठ) के सटीक मान और अनंत श्रेणियों का सिद्धांत प्रस्तुत किया।

विज्ञान में योगदान

1. **खगोलशास्त्र –** आर्यभट्ट ने पृथ्वी के घूर्णन और ग्रहण के वैज्ञानिक कारण बताए।

उन्होंने वर्ष की अवधि का सटीक निर्धारण किया।

2. **आयुर्वेद और चिकित्सा –** चरक की 'चरक संहिता' में औषधि विज्ञान और शरीर रचना का वर्णन है।

सुश्रुत की 'सुश्रुत संहिता' में शल्य चिकित्सा के लगभग 300 से अधिक प्रकार के ऑपरेशन का उल्लेख है।

3. **धातु विज्ञान –** दिल्ली का लौह स्तंभ भारतीय धातुकर्म की उत्कृष्टता का प्रमाण है, जो हजारों वर्षों से जंग रहित है।

4. **आधुनिक वैज्ञानिक परंपरा –** सी. वी. रमन ने 'रमन प्रभाव' की खोज की।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने चंद्रयान और मंगलयान मिशनों द्वारा भारत को अंतरिक्ष विज्ञान में अग्रणी बनाया।

'भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित और विज्ञान का विकास तर्क, अनुभव और प्रयोग पर आधारित था। शून्य, दशमलव, आयुर्वेद, खगोलशास्त्र और धातु विज्ञान जैसे योगदानों ने विश्व सभ्यता को नई दिशा दी।

यह परंपरा आज भी आधुनिक विज्ञान के साथ सामंजस्य स्थापित कर मानव कल्याण की दिशा में प्रेरणा देती है।'

भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल मूल्य

सत्य
अहिंसा
धर्म
सहिष्णुता
वसुधैव कुटुम्बकम्
सेवा

इन मूल्यों ने भारतीय समाज को एकता और संतुलन प्रदान किया है।

चुनौतियाँ- भारतीय ज्ञान परम्परा की चुनौतियाँ :

1. **पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव –** आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पाश्चात्य विचारों को अधिक महत्व दिया गया है।

इसके कारण भारतीय ज्ञान परम्परा को अपेक्षित स्थान नहीं मिल पा रहा है।

2. **संस्कृत और प्राचीन भाषाओं की कठिनता –** अधिकांश मूल ग्रंथ संस्कृत में हैं, जिन्हें समझना सामान्य विद्यार्थियों के लिए कठिन है।

भाषा की जटिलता के कारण उनका अध्ययन सीमित हो जाता है।

3. **आधुनिक जीवन की व्यस्तता –** आज का जीवन अत्यंत तेज और प्रतिस्पर्धात्मक हो गया है।

लोग पारंपरिक ज्ञान के अध्ययन के लिए समय नहीं निकाल पाते।

4. **शोध और संसाधनों की कमी –** भारतीय ज्ञान प्रणाली पर पर्याप्त शोध और आधुनिक व्याख्या का अभाव है।

संसाधनों की कमी के कारण कई महत्वपूर्ण पांडुलिपियाँ सुरक्षित नहीं रह पातीं।

5. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता –** कई परम्परागत ज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक कसौटी पर परखा नहीं गया है।

इस कारण युवा पीढ़ी में उसके प्रति संशय बना रहता है।

आधुनिक समय में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता – आधुनिक युग विज्ञान, तकनीक और वैश्वीकरण का युग है। आज मानव जीवन भौतिक रूप से अत्यंत उन्नत है, परन्तु मानसिक तनाव, नैतिक संकट, पर्यावरण असंतुलन और सामाजिक विघटन जैसी समस्याएँ भी बढ़ रही हैं। ऐसे समय में भारतीय ज्ञान परम्परा संतुलित और मूल्य-आधारित जीवन का मार्ग प्रस्तुत करती है।

1. **मानसिक शांति और स्वास्थ्य –** योग, ध्यान और प्राणायाम मानसिक तनाव को कम करने में सहायक हैं। भारतीय योग परम्परा, जिसे व्यवस्थित रूप से पतंजलि ने प्रस्तुत किया, आज विश्वभर में स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन का प्रभावी साधन मानी जाती है।

2. **नैतिक और सामाजिक मूल्यों की स्थापना –** सत्य, अहिंसा, करुणा

और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे सिद्धांत सामाजिक समरसता को बढ़ाते हैं। भारतीय दर्शन व्यक्ति को कर्तव्य, संयम और जिम्मेदारी का बोध कराता है, जो आधुनिक समाज में अत्यंत आवश्यक है।

3. पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि – भारतीय परम्परा में प्रकृति को पूजनीय माना गया है। यह दृष्टिकोण मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करने में सहायक है, जो आज के पर्यावरण संकट में अत्यंत प्रासंगिक है।

4. समग्र शिक्षा का मॉडल – गुरुकुल परम्परा में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण था। आज की शिक्षा प्रणाली में भी समग्र विकास की आवश्यकता महसूस की जा रही है, जिसे भारतीय ज्ञान परम्परा पूरा कर सकती है।

5. वैश्विक शांति और सहयोग – 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना विश्व शांति और सहयोग का संदेश देती है। भारतीय ज्ञान परम्परा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सह-अस्तित्व और मानवीय एकता की प्रेरणा देती है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परम्परा आधुनिक युग की चुनौतियों के समाधान हेतु एक सशक्त और सार्थक आधार प्रदान करती है।

संरक्षण और संवर्धन के उपायः–भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और संवर्धन के उपाय निम्न लिखित है–

1. सरल भाषा में अनुवाद और व्याख्या – प्राचीन ग्रंथों का सरल हिंदी एवं अन्य भाषाओं में अनुवाद किया जाए।
साथ ही उनकी आधुनिक संदर्भ में व्याख्या प्रस्तुत की जाए, ताकि युवा पीढ़ी उन्हें आसानी से समझ सके।

2. शिक्षा प्रणाली में समावेश – विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर भारतीय ज्ञान परम्परा को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार भारतीय ज्ञान प्रणाली को व्यावहारिक रूप से लागू किया जाए।

3. डिजिटल संरक्षण – प्राचीन पांडुलिपियों और ग्रंथों का डिजिटल संग्रह तैयार किया जाए। ई-लाइब्रेरी और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से इन्हें वैश्विक स्तर पर उपलब्ध कराया जाए।

4. शोध एवं अनुसंधान को प्रोत्साहन – विश्वविद्यालयों में भारतीय दर्शन, आयुर्वेद, योग और प्राचीन विज्ञान पर शोध को बढ़ावा दिया जाए। सरकार और संस्थानों द्वारा विशेष अनुसंधान केंद्र स्थापित किए जाएँ।

5. अंतरराष्ट्रीय प्रचार-प्रसार – योग, आयुर्वेद और भारतीय दर्शन को वैश्विक मंचों पर प्रस्तुत किया जाए। अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से इसकी महत्ता को उजागर किया जाए।

6. जनजागरूकता अभियान – सेमिनार, कार्यशाला और व्याख्यानों के माध्यम से समाज में जागरूकता बढ़ाई जाए। मीडिया और सोशल मीडिया के जरिए युवाओं को भारतीय ज्ञान से जोड़ा जाए।

इस प्रकार सुनियोजित प्रयासों से भारतीय ज्ञान परम्परा का संरक्षण और संवर्धन प्रभावी रूप से किया जा सकता है।

निष्कर्ष– भारतीय ज्ञान परम्परा मानव सभ्यता की एक अमूल्य धरोहर है, जो हजारों वर्षों के चिंतन, अनुभव और साधना का परिणाम है। यह परम्परा केवल धार्मिक या आध्यात्मिक विचारों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, गणित, शिक्षा, राजनीति और नैतिक मूल्यों का व्यापक समावेश है। प्राचीन ग्रंथों, महाकाव्यों और दार्शनिक धाराओं के माध्यम से भारतीय चिंतकों ने जीवन के गूढ़ प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत किया है।

इस परम्परा की विशेषता यह है कि यह मनुष्य के समग्र विकास पर बल देती है–शरीर, मन और आत्मा के संतुलन को आवश्यक मानती है। सत्य, अहिंसा, धर्म, करुणा और 'वसुधैव कुटुम्बकम' जैसे मूल्य आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने प्राचीन काल में थे। आधुनिक युग की चुनौतियों मानसिक तनाव, पर्यावरण संकट और सामाजिक विघटन–का समाधान भी भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित है।

हालाँकि पाश्चात्य प्रभाव, भाषा की जटिलता और शोध की कमी जैसी चुनौतियाँ सामने हैं, फिर भी उचित संरक्षण और संवर्धन के माध्यम से इस विरासत को पुनर्जीवित किया जा सकता है। आवश्यकता है कि भारतीय ज्ञान को आधुनिक संदर्भों में समझा जाए और शिक्षा तथा शोध के माध्यम से आगे बढ़ाया जाए।

अतः स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परम्परा केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के निर्माण की आधारशिला है। यह मानवता को संतुलन, शांति और नैतिक दिशा प्रदान करने वाली अमर धारा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. आर्यभट्ट. (2012). आर्यभटीय (अनुवादः के. एस. शुक्ल). नई दिल्ली: भारतीय विद्या भवन.
2. बाशम, ए. एल. (1954). The wonder that was India- London: Sidgwick & Jackson.
3. भास्कराचार्य. (2015). लीलावती (संपा. एच. टी. कोलब्रुक). वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन.
4. दासगुप्ता, एस. एन. (1922). A history of Indian philosophy (Vols- 1–5). Cambridge: Cambridge University Press.
5. दिनकर, रामधारी सिंह. (2006). संस्कृति के चार अध्याय. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन.
6. गांधी, एम. के. (2009). हिन्द स्वराज. अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन.
7. मुखर्जी, राधाकुमुद. (2011). Ancient Indian education.दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.
8. पतंजलि. (2016). योगसूत्र (अनुवादः स्वामी विवेकानंद). कोलकाता: अद्वैत आश्रम.
9. राधाकृष्णन, एस. (1923). Indian philosophy (Vols- 1–2). London: George Allen & Unwin.
10. वाल्मीकि. (2016). रामायण. गोरखपुरः गीता प्रेस.
11. वेदव्यास. (2017). महाभारत. गोरखपुरः गीता प्रेस.
12. वेदव्यास. (2018). श्रीमद्भगवद्गीता. गोरखपुरः गीता प्रेस.
13. चरक. (2014). चरक संहिता. वाराणसी:चौखंबा संस्कृत संस्थान.
14. सुश्रुत. (2013). सुश्रुत संहिता. वाराणसी:चौखंबा संस्कृत सीरीज.
15. कौटिल्य. (2012). अर्थशास्त्र (अनुवादः आर. शमाशास्त्री). मैसूरः मैसूर ओरिएंटल लाइब्रेरी.
16. ऋग्वेद. (2015). ऋग्वेद संहिता. गोरखपुरः गीता प्रेस.
17. यजुर्वेद. (2015). यजुर्वेद संहिता. गोरखपुरः गीता प्रेस.
18. सामवेद. (2015). सामवेद संहिता. गोरखपुरः गीता प्रेस.
19. अथर्ववेद. (2015). अथर्ववेद संहिता. गोरखपुरः गीता प्रेस.
20. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन विभाग.